P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-3* November- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

पर्यावरण सहज विकास

सारांश

किसी भी राष्ट्र का विकास मुख्यतः इस बात पर निर्भर करता है कि उस राष्ट्र में प्राकृतिक संसाधनों की पूर्ति कितनी है? व भविष्य के लिए इनकी उपलब्धता कितनी है? इसके अतिरिक्त इन संधनों की गुणवत्ता भी इसे प्रभावित करती है। साथ ही साथ उस देश में पर्यावरण संसाधन इस बात पर भी निर्भर करते है कि वहां की अर्थव्यवस्था का स्वरूप कैसा है? व वहॉ किस प्रकार की उत्पादन तकनीकें एवं पर्यावरण सुरक्षा संबंधी नीतियॉ अपनायी जा रही है। विकास को प्रभावित करने वाले कारकों में जल एवं वायु प्रदूषण भी आते है जो आर्थिक क्रियाओं को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते है। वर्तमान समय में तीव्र औद्योगीकरण पर्यावरण को प्रभावित कर रहा है। औद्योगीकरण के परिणाम स्वरूप शहरीकरण, वाहनों में वृद्धि – ध्वनि, प्रदूषण आदि पर्यावरण प्रदूषण में वृद्धि कर रहे है।

पर्यावरण सहज विकास से अर्थ ऐसा विकास जिसमे वर्तमान पीढ़ी की जीवन की गुणवत्ता के साथ भावी पीढ़ी की भी जीवन की गुणवत्ता बनी रहे।

मुख्य शब्द : पर्यावरण, राष्ट्र, विकास

मंजुलता कश्यप
सहायक प्राध्यापक,
अर्थशास्त्र विभाग,
ठाकुर छेदीलाल शासकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जांजगीर ,छ.ग.

प्रस्तावना

आदिकाल से मानव और प्रकृति का अटूट संबंध रहा है। सभ्यता के विकास में प्रकृति ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। विकास के प्रारंभिक चरण में कोई भी जीवधारी अथवा मनुष्य सर्वप्रथम प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए उसके अनुकूल होने का प्रयास करता है, इसके पश्चात् वह धीरे धीरे प्रकृति में परिवर्तन करने का प्रयास करता है। अतः अनुकूलन की प्रक्रिया धरातल पर जीवन को बनाए रखने वाली एक कुंजी है, जो उसे विकसित होने का निरन्तर अवसर प्रदान करती है।

वर्तमान में मनुष्य ने अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इतना अधिक विकास किया है कि उसका जीवन आरामदायक हो गया है परन्तु आवश्यकता पूर्ति के लिए वन विनाश करने से प्रकृति में असंतुलन का खतरा बढ़ता जा रहा है। वर्तमान में मनुष्य प्रकृति का स्वामी बनने के प्रयास में लगा हुआ है। आधुनिकता के नाम पर वह प्रकृति का शोषण करता जा रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. पर्यावरण अनुकूल विकास को समझना।
2. पर्यावरण सहज विकास को सभी को अपनाने के लिए प्रेरित करना।
3. पर्यावरण एवं विकास के बीच संतुलन किस प्रकार बनेगा? इसका अध्ययन करना।

अध्ययन विधि

द्वितीयक समंको पर आधारित

उपकल्पना

मानव निर्मित क्रियाएं पर्यावरण सहज विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही है।– सत्य सिद्ध हुई। इसलिए पर्यावरण संरक्षण के लिए मनुष्य को अपनी दिनचर्या में परिवर्तन करना होगा। प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर रखने से पर्यावरण सहज विकास संभव होगा।

शोध विधि

अप्रत्यक्ष, व्यवहारिक शोध

साहित्यावलोकन

दिनेश मणि[1] ने बताया कि अम्ल वर्षा के जन्म की कहानी बीसवीं शती के दूसरे दशक से प्रारंभ होती है जब कोयला और पेट्रोलियम जैसे जीवाश्म ईंधनो का उपयोग बढ़ने लगा। डॉ. नीता गुप्ता[2] के अनुसार इस सदी के अंत तक अगर वाहनों और चिमनियों का धुंआ कम न किया गया तो भारतीय प्रायद्वीप का औसत तापमान 5.5 डिग्री सेल्सियस बढ़ सकता है। डॉ. नरेन्द्र पाल

सिंह एवं नवनीत कुमार राजपूत[3] के अनुसार आज का मानव प्रकृति के संतुलन में हस्तक्षेप, भौतिकतावाद एवं विकासात्मक क्रियाएं कर उसके संतुलन को बिगाड़ रहा है। प्रियंका द्विवेदी[4] के अनुसार आदिमानव से आधुनिक सभ्य मानव बनने तक के सफर में मनुष्य ने यथासंभव विलासिता और विकास के संसाधन जुटाये। इन संसाधनों के निर्माण ने प्रकृति को हरसंभव चुनौती दी। राहुलधर द्विवेदी[5] के अनुसार आज जरूरत है कि हम कुछ सार्थक व सकारात्मक करे जो पर्यावरण के संरक्षण, पोषण व संवर्धन में सहायक हो। डॉ. एल.के. इदनानी[6] के अनुसार आज हम आधुनिक कृषि व्यवस्था में जिन तरीकों को अपना रहे है वे टिकाऊ नहीं है। अश्विनी कुमार लाल[7] के अनुसार बढ़ती जनसंख्या और विश्व अर्थव्यवस्था के विकास और भरण पोषण के लिए शुरू की गई वैकासिक योजनाओं से होने वाली मानव केन्द्रित ग्रीन हाऊस गैस के उत्सर्जन में एक अंतर्निहित संबंध है। शंभूनाथ यादव[8] के अनुसार जब, जलवायु परिवर्तन होगा तो किसी न किसी रूप में उसका असर कृषि पर भी पड़ेगा। प्रांजल घर[9] के अनुसार जलवायु परिवर्तन के लिए उत्तरदायी कारणों में प्रमुख कारण उत्सर्जित कार्बन डाई ऑक्साईड की मात्रा में वृद्धि होना है। संतोष कुमार[10] के अनुसार मानवीय आवश्यकताओं और आकांक्षाओं का संतोष विकास का प्रमुख उद्देश्य है। चंद्रभान यादव[11] ने बताया कि ग्रामीण विकास संबंधी योजनाओं को लागू करते वक्त पर्यावरण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। फिर भी पर्यावरण संरक्षण के लिए सामूहिक भागीदारी निभानी होगी। अभिनीत कुमार[12] के अनुसार भारत तथा सभी देश टिकाऊ विकास एवं इसके तीन आयामों – सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरण के प्रति प्रतिबद्ध है। डॉ. केशव टेकाम एवं तुलसीराम दहायत[13] के अनुसार पर्यावरण सहज विकास ऐसा विकास है जिसमें वर्तमान पीढ़ी की जीवन की गुणवत्ता के साथ–साथ भावी पीढ़ी की भी जीवन की गुणवत्ता बनी रहे। के.जी. सक्सेना[14] के अनुसार – जलवायु परिवर्तन संपोषणीय विकास के विविध आयामों में से एक है। सभी की इच्छा है कि जलवायु परिवर्तन को कम करके संपोषणीय विकास को प्राप्त किया जाये।

तीव्र आर्थिक विकास के लिए अनियंत्रित रूप से प्राकृतिक संसाधनों के विदोहन, औद्योगिक क्रांति, द्रुतगामी परिवहन, साधनों व बढ़ते मशीनीकरण के कारण आज संपूर्ण विश्व पर्यावरण संकट जैसी ज्वंलत समस्या से जूझ रहा है। मानव ने अपना जीवन सुविधाजनक एवं विलासपूर्ण बनाने के लिए पर्यावरण को विनाश के कगार पर पहुंचा दिया है। विश्व में बढ़ते पर्यावरण संकट का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि आगामी कुछ वर्षो में सूखा प्रभावित क्षेत्र की लगभग 70 प्रतिशत जमीन बंजर हो जाएगी, जिससे विश्व के सौ देशों की एक अरब से अधिक जनसंख्या के जीवन अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लग जायेगा।

पर्यावरण पर बढ़ते संकट की झलक समुद्र के बढ़ते जल–स्तर, जैव विविधता में हृास, पृथ्वी के बढ़ते तापमान के रूप में देखी जा सकती है। पर्यावरण असंतुलन की वजह से मानव, पशु पक्षी और वनस्पति का जीवन संकट में है।

''यदि विश्व को संभावित प्रलयकारी पर्यावरणीय परिस्थितियों से बचाना है तो तत्काल आवश्यकता है कि विश्व के विकसित देश–कार्बन उत्सर्जन में त्वरित कटौती करें एवं विकासशील अर्थव्यवस्थाएं भी इसी दिशा में प्रभावी कदम उठाए।'' – संयुक्त राष्ट्र संघ विकास कार्यक्रम रिपोर्ट की उक्त टिप्पणी विश्व को पर्यावरण संकट की चेतावनी देते हुए तत्काल ठोस एवं प्रभावी व्यूह रचना अपनाए जाने की आवश्यकता को रेखांकित करती है। पर्यावरण संगठन की प्रमुख सुनीता नारायण ने भी चेतावनी दी है कि – ''अब समय आ गया है कि हम अपनी मूर्खता से बाहर निकले और निश्चित करे कि तीव्र आर्थिक विकास चाहिए अथवा पर्यावरण सुरक्षा।''

आर्थिक समीक्षा 2011–12 के अनुसार अब पर्यावरण व्यवस्था को 5 प्रमुख चुनौतियों के साथ जोड़कर देखा गया है। ये 5 प्रमुख चुनौतियॉ इस प्रकार है – जलवायु परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा, जल सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा और शहरीकरण प्रबंधन।

विकास एवं पर्यावरण के आपसी संबंधो को समझने के लिए इन पॉचो चुनौतियों को क्रम से समझना आवश्यक है। प्रथम चुनौती जलवायु परिवर्तन की है जो प्राकृतिक पारिस्थितिकी को प्रभावित करती है और भारत में काफी मात्रा में इसके प्रतिकूल असर की आशंकाएं मौजूद है। विशेषकर कृषि जिस पर हमारी 68 प्रतिशत जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए निर्भर है। कृषि पर जलवायु परिवर्तन का प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। हिमालय के हिमनद जो प्रमुख नदियों तथा भूजल पुर्नसंचयन के मुख्य स्त्रोत है, में पानी की कमी चिन्ता का एक अन्य विषय है। आज जब हमारा देश विकास के पथ पर निरन्तर अग्रसर है, तब हमें इस बात का पूरा ध्यान रखना होगा कि जलवायु परिवर्तन न सिर्फ समुद्र की सतह को ऊपर उठाकर हमारी तटीय बस्तियों के लिए खतरा उत्पन्न कर रहा है, बल्कि यह उग्र प्राकृतिक आपदाओं–तूफान, बाढ़ तथा सूखे के लिए भी जिम्मेदार है। आज हमारी सरकार इस बात को स्वीकार करती है कि आगे चलकर यही समस्याएं देश की खाद्य सुरक्षा और जल सुरक्षा को भी संकट में डाल सकती है। इसके अतिरिक्त विकास के पथ को प्रशस्त करने के लिए भारत को अपनी तेजी से बढ़ रही ऊर्जा आवश्यकता को भी पूरा करना है। अभी भारत अपनी तेल जरूरतों को पूरा करने के लिए 80 प्रतिशत तक आयात पर निर्भर है। ग्रामीण जनसंख्या का एक बड़ा भाग आज भी ग्रिड या सक्षम आधुनिक ईंधन संसाधनों से नहीं जुड़ पाया है। भारत की प्रति व्यक्ति ईंधन खपत का औसत 439 कि.ग्रा. है। जो विश्व की औसत ईधन खपत 1688 कि.ग्रा. से काफी कम है। योजना आयोग की रिपोर्ट के अनुसार घरेलू क्षेत्र में ईंधन की कमी केवल इसलिए नहीं है कि इस क्षेत्र में विद्युत शक्ति की उपलब्धता का अभाव है बल्कि इसलिए भी है कि भोजन पकाने और रोशनी के लिए हम आज भी ईंधन के पारम्परिक साधनों पर निर्भर है।

राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (NSSO) के 2004–05 के सर्वेक्षण के अनुसार 45 प्रतिशत ग्रामीण

जनसंख्या मिट्टी का तेल या मोमबत्ती पर निर्भर रहने के लिए मजबूर है। 84 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या भोजन पकाने के लिए पारम्परिक साधनों पर निर्भर है।

पर्यावरण एवं वहनीय विकास के संदर्भ में भारत ने उल्लेखनीय प्रगति प्राप्त की है। भूमि प्रयोग के दबाव के बावजूद जंगलों में वृद्धि हुई है जो पर्यावरणीय वहनीयता का प्रमुख मापक है। भारत उन चुने हुए विकासशील देशो में से एक है जहां पिछले 20 वर्षो में वनाच्छादित क्षेत्रो मे वृद्धि हुई है। वर्ष 2011 को संयुक्त राष्ट्र ने वनो के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष के रूप में घोषित किया था। भारत में वनावरण इसके भौगोलिक क्षेत्रफल का 21. 05 प्रतिशत है भारत में वनावरण प्रतिशत में वृद्धि हेतु तीव्र प्रयासों की आवश्यकता है क्योंकि यह अभी भी राष्ट्रीय वन नीति द्वारा निर्धारित न्यूनतम मानक 33 प्रतिशत से कम है।

पर्यावरण और विकास में आपसी सामंजस्य में वृद्धि करने के लिए न सिर्फ अनके देशो की सरकारें अपने अपने घरेलू स्तरों पर क्रियाशील है बल्कि यूनाइटेड नेंशन्स फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेन्ज जैसे वैश्विक प्रयास भी विकास को पर्यावरणन्मुख बनाने के लिए प्रयासरत है। चर्चित बाली कार्ययोजना के बाद दिसम्बर 2010 में कानकुन सम्मेलन, 28 नवम्बर–10 दिसम्बर 2011 तक आयोजित डरबन जलवायु परिवर्तन सम्मेलन विकास को मानवोचित बनाए रखने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। डरबन सम्मेलन के निष्कर्ष हरित जलवायु निधि और अनुकूलन फ्रेमवर्क से संबंधित कानकुन करारो की प्रगति को प्रतिबिंबित करते है। भारत ने यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है कि नई व्यवस्थाएं न सिर्फ एक प्रोटोकॉल अथवा एक विधिक लिखित तक सीमित हो बल्कि कन्वेशन के अंतर्गत विधिक बल सहित एक सहमत परिणाम का विकल्प भी इसमें सम्मिलित किया जाए।

पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों ने विकास को सदैव गति प्रदान की है और इसलिए यह हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए उससे सुन्दर और रमणीक धरती छोड़कर जाए, जितनी हमारी पूर्वजों ने हमारे लिए छोड़ी थी। विकास और पर्यावरण के जटिल रिश्तों को समझकर ऐसा विकास किया जा सके जो पर्यावरण की कीमत पर न हो, जो मानव के अस्तित्व की कीमत पर न हो।

पर्यावरणीय चुनौतियॉ विकासात्मक उद्देश्यों एवं लाभ को सीमित कर सकती है। तेज आर्थिक विकास एवं लाभ कमाने की क्षमता के कारण भविष्य में संसाधनों की सीमितता की समस्या उत्पन्न होगी। भूमि अवक्रमण और जल–स्तर में कमी आने के साथ–साथ प्राकृतिक संसाधनों पर निरन्तर बढ़ रहे दबाव के परिणामस्वरूप खाद्यान्न, सामाजिक, आर्थिक आजीविका और पर्यावरण सुरक्षा के प्रति गंभीर चुनौतियॉ सामने आ रही है।

ग्रामीण समुदायों को सामाजिक आर्थिक रूप से अधिकार संपन्न बनाने हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों विशेष रूप से भूमि और जल के संरक्षण के लिए सहभागी विकास की भावना को व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है। पर्यावरण संरक्षण और पारिस्थितिकी संतुलन की समस्या 21वीं सदी की एक चुनौतीपूर्ण समस्या बन् गई है। हमे ऐसी योजनाओं तथा कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने की आवश्यकता है जिससे हमारी जनशक्ति तथा सभी प्राकृतिक साधनों का पूर्ण विकास एवं उपयोग किया जा सके।

सही ढंग से लागू किए जाने पर पर्यावरण सहज योजनाएँ, रोजगार सृजित करती है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित करती है। पर्यावरण संरक्षण आज राष्ट्रीय ही नहीं एक वैश्विक आवश्यकता बन गई है। भारत में विकास का जो प्रारूप विकसित हुआ उसमें मनुष्य के साथ–साथ प्रत्येक जीव व जड़ प्रकृति की आवश्यकताओं का ध्यान रखा गया था। मनुष्य के केवल भौतिक पक्ष की चिन्ता करने की बजाय उसके सामाजिक, मानसिक और आत्मिक पक्षो की भी चिन्ता की गई थी। भारत में विकसित जीवन जीने की कला को अपनाने और उसके अनुसार विकास के मापदंडो को तय किए बिना पर्यावरण और विकास की समस्या नहीं सुलझ सकती।

राष्ट्रीय पर्यावरण नीति 2006 में प्रयास किया गया है कि पर्यावरण के सरोकारों को विकास की गतिविधियों में मुख्य स्थान दिया जाए। सरकार अपनी नीतियों के माध्यम से पारिस्थितिकीय समस्याओं को वैकासिक प्रक्रिया के साथ जोड़ने का प्रयास करती रही है जिससे पर्यावरण में कोई स्थायी परिवर्तन किए बिना आर्थिक विकास के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। तीन दृष्टान्तों से स्पष्ट है कि भारत ने संपोषणीय विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियॉ प्राप्त की है। ये है – जीवन प्रत्याशा, वन क्षेत्र में वृद्धि और युवा महिलाओं में साक्षरता।

सुझाव

अधिक से अधिक जंगल उगाया जाए जो कार्बन सोखने का काम करते है। सतही जुताई वाले खेतों की जगह गहरी जुताई वाले खेतों को लाया जाए। बायोमास बर्निंग पावर प्लॉट्स में कार्बन को इकट्ठा करके संग्राहित करने का काम भी किया जा सकता है। केमिकल फिल्टर के जरिए कार्बन को सीधे हवा से खींचकर स्टोर किया जा सकता है अथवा खनिजों को पीसकर जमीन और समुद्र में डाला जा सकता है जिससे युगों में होने वाली प्रक्रिया को कुछ वर्षो में संपन्न कराकर कार्बोनेट चट्टाने बनाई जा सकती है। इनमें कार्बन डाई ऑक्साईड कैद हो जाती है। अक्षय ऊर्जा से दुनिया के लिए काफी हद तक फायदेमंद बिजली बनाई जा सकती है।

पर्यावरण सहज विकास के लिए कुछ उपाय निम्नलिखित है – भवन बनाते समय कम से कम एक वृक्ष लगाए, इससे मकान में रहने वालों को फल, शुद्ध हवा मिलेगी। वॉटर रिचार्ज होगा, चिड़ियों को आश्रय मिलेगा, ऑक्सीजन मिलेगी। आवासीय कॉलोनी में जहॉ सड़क की चौड़ाई पर्याप्त हो वहॉ भूमि स्वामी को सड़क किनारे वृक्ष लगाने की अनुमति दी जाए। भू जल के गिरते स्तर को देखते हुए रेन वाटर हार्वेस्टिंग को कड़ाई से लागू किया जाए। उद्यानों एवं सड़को के किनारे वॉटर री चॉर्जिंग पीट बनाया जाए। ''सरोवर हमारा धरोहर'' ये सिर्फ नारा नहीं, बल्कि इसे अमल मे लाया जाए।

निष्कर्ष

जलवायु परिवर्तन पर अंतर्सरकारी पेनल के 116 में से 101 मॉडल मानकर चलते है कि हवा में से कार्बन निकाल लिया जायेगा, जिससे 2 डिग्री का लक्ष्य प्राप्त किया जा सके। लेकिन उसके लिए सन् 2100 तक 819 अरब टन गैस हटानी होगी।

अधिकतर पर्यावरणीय समस्याएं पर्यावरणीय अवनयन और मानव जनसंख्या और मानव द्वारा संसाधनों के उपभोग में वृद्धि से जुड़ी है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संसाधन क्षरण के लिए जनसंख्या के दबाव तेज वृद्धि दर और लोगों के उपभोग प्रतिरूप को भी प्रभावी रूप से जिम्मेदार माना जा रहा है।

हर देश और देशों के भीतर हर समूह चाहता है कि उसका उत्कृष्ट जीवन स्तर बरकरार रहे और धरती को बचाने की कीमत कोई और चुकाये। स्वार्थ के इसी टकराव के कारण बात आगे नहीं बढ़ रही है। आज सबको यह समझने की जरूरत है कि आधुनिक उपभोग की अंधी दौड कार्बन उत्सर्जन के ऐसे विज्ञान एवं अर्थव्यवस्था पर आधारित है जिसने प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ दिया है। अब जरूरत है ऐसे साझा एवं सहभागी प्रयासों की है जिससे हमारा पर्यावरण सचमुच सुरक्षित रह सके।

भावी रणनीति

पर्यावरण सहज विकास हरित संकेतकों का उपयोग तथा ग्रामीण विकास कार्यक्रमों एवं योजनाओं का मूल्यांकन भी करता है। पर्यावरण सहज विकास, समावेशी विकास में सहयोग करता है। पर्यावरणीय स्थायित्व को उन्नत करता है। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में सुधार पर बल देता है। संसाधनों के उपयोग की कुशलता में वृद्धि करता है पर्यावरण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों में कमी करता है। समुदायों की जलवायु को झेल पाने की क्षमता को मजबूती प्रदान करता है। साथ ही जलवायु परिवर्तन में कमी में लाने में योगदान करता है।

पर्यावरण सहज विकास योजनाओं मे मुख्य है –

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा)

यह प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित रखने में सहयोग प्रदान करता है। कृषि उत्पादन व्यवस्था में स्थायित्व, मृदा उर्वरता, भू जल पुनर्भरण, वनस्पति आवरण की उन्नति, मृदा एवं जल संरक्षण, आपदा जोखिम में कमी जैव विविधता का संरक्षण, जलवायु विभिन्नता व परिवर्तन के वैश्विक संकट को कम करके वैश्विक पर्यावरणीय लाभ प्रदान करता है।

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन

जून 2011 में प्रारंभ मिशन का उद्देश्य ग्रामीण गरीबों के लिए प्रभावी एवं कुशल संस्थागत मंच का निर्माण करना है। टिकाऊ आजीविका वृद्धि और वित्तीय संस्थाओं के उपयोग में सुधार के माध्यम से घरेलू आय में वृद्धि करने के लिए उन्हे सक्षम बनाना है। इस योजना का केन्द्र गैर लकड़ी वन उपज, स्थायी कृषि विकास, गैर कृषि रोजगार आधार पर पर्यावरण सदृश्य बनाने पर केन्द्रित है।

समेकित वाटरशेड प्रबंधन कार्यक्रम

यह 2009–10 में प्रारंभ की गई। इसका मुख्य उद्देश्य मृदा, वनस्पति और जल जैसे अवक्रमित प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग, संरक्षण और विकास करके पारिस्थितिकी संतुलन स्थापित करना है। इसके परिणामस्वरूप मृदा ह्रास में कमी, प्राकृतिक वनस्पति का पुनर्सृजन, वर्षा जल का एकत्रीकरण तथा भूजल स्तर का संभरण होता है।

राष्ट्रीय ग्रामीण स्वच्छ पेयजल कार्यक्रम

इसका उद्देश्य ग्रामीण गरीबों को बुनियादी आवश्यकताओं में से एक स्वच्छ पानी की उपलब्धता को सुनिश्चित करना है। योजना को पर्यावरण सहज बनाने हेतु छत पर वर्षा जल संचयन, स्त्रोतों के संरक्षण, पुर्नजीवन तथा नदियों के उपचार हेतु कार्ययोजना तैयार की गई है।

निर्मल भारत अभियान

जल स्वच्छता और स्वास्थ्य के बीच सीधा संबंध है। इस योजना के उद्देश्य है– ग्रामीण क्षेत्रो में सामान्य जीवन स्तर में सुधार, 2022 तक निर्मलता को प्राप्त करने के लिए स्वच्छता कवरेज में तेजी लाना, स्थायी स्वच्छता सुविधाओं को प्रोत्साहन, ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन पर विशेष ध्यान देते हुए समुदाय प्रबंधित पर्यावरणीय स्वच्छता पद्धति विकसित करना।

इंदिरा आवास योजना

सुव्यवस्थित निकाय के रूप में ध्यान केन्द्रित करना जिसमे जल धूप और हरियाली जैसे प्राकृतिक संसाधनों के प्रयोग को स्थायित्व रखा जाता है। अनुसूचित जातियो, जनजातियों के परिवारो, महिलाओं की प्रमुखता वाले परिवारों को योजना का लाभ प्राप्त करने और मकानों का निर्माण कर पाने में सक्षम बनाते हुए समानता और सामाजिक न्याय को प्रोत्साहन देना।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *दिनेश मणि – पर्यावरणीय प्रदूषण और अम्ल वर्षा, योजना, जून 2002, पृ.क्र. 25*
2. *डॉ. नीता गुप्ता – ग्लोबल वार्मिंग – एक अहम चुनौती, कुरूक्षेत्र, नवम्बर 2003, पृ.क्र. 6*
3. *डॉ. नरेन्द्र पाल सिंह, नवनीत कुमार राजपूत – पर्यावरण प्रदूषण कारण और निवारण, कुरूक्षेत्र, दिसम्बर 2004, पृ.क्र. 12*
4. *प्रियंका द्विवेदी – प्राकृतिक संसाधन और उनका संरक्षण, कुरूक्षेत्र, जून 2007, पृ.क्र. 29*
5. *राहुलधर द्विवेदी – मानव विकास की कीमत देता पर्यावरण, कुरूक्षेत्र, जनवरी 2008, पृ.क्र. 8*
6. *डॉ. एल.के. इदनानी – पर्यावरण संरक्षण आज की जरूरत, कुरूक्षेत्र जनवरी 2008, पृ.क्र. 11*
7. *अश्विनी कुमार लाल – धरती के बढ़ते तापमान का मुकाबला, योजना, जून 2008, पृ.क्र. 24*
8. *शंभूनाथ यादव – जलवायु परिवर्तन से निपटने को हम है तैयार, कुरूक्षेत्र, मार्च 2010, पृ.क्र. 3*
9. *प्रांजल धर – जलवायु परिवर्तन – कारण और प्रभाव, योजना, अप्रैल 2010, पृ.क्र. 23*
10. *संतोष कुमार – पर्यावरण, विकास एवं आपदा – पंचतत्व संतुलन योजना, मई 2012, पृ.क्र.9*

11. चंद्रभान यादव – पर्यावरण संरक्षण का हो सामूहिक प्रयास, कुरूक्षेत्र, जून 2012, पृ.क्र. 3
12. अभिनीत कुमार – आर्थिक विकास में पर्यावरण का योगदान, योजना जून 2013, पृ.क्र. 33
13. डॉ. केशव टेकाम एवं तुलसीराम दहायत – पर्यावरण सहज विकास परियोजनाएं, कुरूक्षेत्र, फरवरी 2014, पृ.क्र. 4
14. के.जी. सक्सेना – जलवायु परिवर्तन और संपोषणीय विकास योजना, दिसम्बर 2015, पृ.क्र. 9